शोध पत्र- हिन्दी

साठोत्तरी हिन्दी साहित्य में नारी की स्थिति

* डॉ. भावना भदौरिया

* जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

पुरूष प्रधान समाज रचना में नारी की स्थिति में लगातार परिवर्तन आते रहे है। इस परिवर्तन के पीछे का कारण चाहे समाजिक राजनैतिक या आर्थिक दबाब कोई भी हो पर भारत में नारी की स्थिति बड़ी ही विवादास्पद रही है। कहीं तो जहॉ नारी की पूजा होती वहॉ देवताओं का निवास होता है। कहकर उसकी अभ्यर्थना की गई कहीं नारी स्वान्त्रयं नार्हति कहकर उसके स्वतन्त्र अस्तितव को नकराने की चेष्ठा की गई है। मानव मात्र के जनक मनु ने अपनी मनुस्मृति में नारी की स्थिति चित्रित करते हुऐ उसके लिए यह आवश्यक बतलाया है कि – ''बाल्यावस्था में वह पिता के अधीन रहे , युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहने पर ही नारी की सद्गति सम्भव है,

वैदिक काल में प्राचीन मनीशियों ने '' जननी जन्म – भूमिश्च स्वर्गादपी भरीयसी'' कहकर नारी के मातृत्व समाज यद्पि पितृ –सन्तातमक था तथापि वह नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण से पूर्ण था। उत्तर वैदिक काल में नारी की पृथक सत्ता या स्वतन्त्रता नही थी। सूत्र ग्रंथ और महाकाव्य के काल में नारी पुरूष की संपत्ति मात्र रह गई थी । महा भारत काल में नारी की स्थिति का हास हो गया था। उसकी स्वतंत्रता नियंत्रित थी। भक्ति काल में नारी को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखा गया। उत्तर मध्यकाल में नारी की स्थिति तो पतन की गर्त में पहुॅच गई थी। उन्नीसवी शदी के भारतीय समाज में पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के विस्तार ने समाज सुधारण को नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया , जिससे प्रेरणा प्राप्त कर युगमों के पश्चात नारी जागृति का शंखनाद हुआ और वह अपनी दीर्घकालीन असहाय अवस्था को भूलकर एक बार फिर अपना गौरवान्वित पद प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हुई।''

भारतीय नारी की स्थिति में परिवर्तन प्रायः उन्नीसवी शदी के बाद ही आया 1946 में देश स्वतंत्र हुआ,विभाजन ने नई समस्याओं का निर्माण किया , स्त्रीवादी विचार–प्रवाह ने नारी चेतना को आंदोलन किया । जिसके कारण साहित्यकारो के विचारो में परिवर्तन आया। परिवर्तन की प्रक्रिया आज तक चल रही है।

''मैं कामायनी की श्रद्धा नहि इडा हूॅ, भावना नही प्रज्ञा हूॅ, मात्र स्पदंनमयी नही तर्कमयी भी हूॅ, मात्र समर्पित नही , अधिकारमयी भी हूॅ''

सन् साठ के बाद महिला उपन्यासकारों ने जिस नारी का चित्र उपस्थित किया है। की स्वतंत्र सोच रखने बाली आत्मनिर्भर संयमी अपने अधिकारों के प्रति सजग अस्मिता के साथ जीने बाली निर्भीक निर्णयक्षम एवं शिक्षित नारी है। यह नारी परिस्थितियों का डटकर मुकाबला कर रही है। कुछ–कुछ नारी चरित्र तो काफी जुझारू है। यह विरासत में मिली गुलामी की परम्परा से परिचित है। वह जूझ रही है सामाजिक रूढियों एवं परम्पराओं से । वह उनसे भागती नही है, बल्कि डटकर सामना करती है। एक समय था जब नारी के लिए पत्नीत्व पहला कर्तव्य था और मातष्तव अंतिम । पढाई विवाह तक का कर्तव्य था।

वह सुरक्षित जीवन जीने के लिए वैवाहिक जीवन को निभाती जाती थी । भले ही वह घुट –घुटकर जीना हो । आलोच्य युग की उपन्यास लेखिकाओं ने ऐसी नारियों का चित्रण किया है। जिन्होनें सुरक्षित जीवन के बदले घुट–घुटकर जीना स्वीकार नही किया । ''कुमारिकाएॅ'' (कष्णासोवती)की नारिया कुमारिकाओं जैसा जीवन जी रही है। ''टेसू की दो कहानिया'' (कृष्णा अग्निहोत्री) की सीता संशयी प्रति प्रकाश का त्याग कर अन्य पुरूष को स्वीकार करती है। ''उसकी पंचवटी'' (कुसुम अंचल) की साध्वी अपने मनोनुकूल व्यक्ति (विक्रम) से शारीरिक सम्बंध स्थापित करती है। ''सह चारिणि'' की नीलम परित्यक्ता होकर अकेले समाज से लड़ने का सामार्थ रखती है। तो ''श्री–लांसर'' (श्रीमती शुभा वर्मा) की नायिका शहाना एक व्यक्ति एवं स्थान से बंधकर रहना नही चाहती,वह बड़ी सहासी और निर्भीक है, अब आज के साहित्य की नारी पुरूश पर आश्रीत नही है वह अकेले जीवन व्यतीत करने में सक्षम है पहले पुरूश उसकी इसी कमजोरी का फायदा उठाता था वह जानता था कि स्त्री अकेली नही रह सकती , इसी कारण वह स्त्री पर अपनी मनमानी दिखाता था, लेकिन अब नारी ने दिखा दिया कि उसे किसी के सहारे की जरूत नही है ''अकेला पलास'' की तहमीना पौरूषहीन पति का त्याग करती है तथा प्रेमी से सम्बंध जोड़ती है पर वहॉ भी जब वह दोखा खाती है तो अकेले जीने का निर्णय करती है अतः यह कहा जा सकता है कि पुरूष स्त्री को अपना ही अनुकरण करने के लिए बाध्य नही कर सकता स्वतंत्रता के साथ ही नारी स्वातत्रय के उगते हुए प्रभात में आधुनिक नारी के जीवन में आशाओं का संचार हुआ है नारियों के अधिकार और कर्तव्य की व्याख्या हुई है

पारिवारिक व्यवस्था में महिलाओं कि महत्व पूर्ण भूमिका का अनुसंधान किया जा रहा है । नव जागरण कि इस पुनीत बेला में अपने युग कि अति महत्व पूर्ण माग यह है कि नारी उत्कर्ष को समय की सबसे बड़ी आवश्यकता माना जाए और उसके लिए प्रयत्न किया जाए ।

साठोत्तरी उपन्यास में चित्रित नारी विवाह के बंधन को अस्वीकार्य कर रही है क्योंकि ''विवाह एक ऐसी सस्था है, जिसमें आज भी ऐसी परम्परा का निर्वाह करने से इंकार करती है जो उसे गुलाम बना रही है पुरूष तंत्र ने विवाहिक जीवन की नियमावली बनाकर अपने आप को स्वच्छंद तथा स्त्री को एक रस जीवन जीने के लिए बाध्य किया है । विवाह संस्था कि नीव यदि पक्की है तो उसकी जड़े हिलनी नही चाहिए, पर कही कमी जरूर है जिसके कारण आज परिवार टूट रहे है आलोच्य युगीन लेखिकाओं ने टूटते वैवाहिक जीवन का , उसमें सिसकते शैशव का अंकन किया है । दाम्पत्य जीवन में व्यक्ति किसी तीसरे से सम्बंध स्थापित कर रहा है । यह तीसरा पुरूष भी है और स्त्री भी । ऐसे समय में विवाह के लिए पर्यायी व्यवस्था निर्माण करना आवष्यक है'' ''आप का बंटी'' (मन्नु भंडारी) में पति–पत्नी के अहंकार आपस में टकराते है तो विवाह विच्छेद हो जाता है ।

उन्नीस सौ पच्चास के बाद कि हिन्दी कहानियों में क्रमशः वैयक्तिकता का दबाब बढता हुआ दिखाई पड़ता है जैनेन्द्र , अज्ञेय और इलाचंद्र जोशी की कहानियॉ व्यक्तिक संवेदनाओं कि संप्रेषणीयता को सिद्ध करती है मन्नू भंडारी ने बड़ी ही ईमानदारी के साथ नारी के मन में उठने बाले भावों , को अपनी कहानियों में चित्रित किया है । कृष्णा सोवती सेक्स जन्य भावुकता को ही उभारकर रह जाती है । शिवानी की कहानियों में सेक्स भी है और किसी सीमा तक नारी मनोविज्ञान को आधुनिक जीवन के नये आयामों में देखने कि इच्छा भी है व्यक्तिवादी जीवन दर्शन के अनुसार, व्यक्ति की जिजीविषा को पहचान ने की आवश्यकता है । नारी अंततः मनुष्य ही है और उसमें कोई ऐसी दीनता या हीनता नही है जिसके कारण उसे नर को आकृष्ट करने की आवष्यकता पड़े । व्यक्तिवादी दृष्टि के कारण नारियों के जीवन में दुःख और संत्रास कि भी सृष्टि हुई है । बदलते युग में महिलाएं पुरूषो से उत्तरोत्तर आगे निकली जा रही है किन्तु उनके शील ,सम्मान की सुरक्षा भी उतनी ही कम होती जा रही है । हिन्दी साहित्य में व्यक्तिक धरातल पर अवस्थित होकर इस सत्य की व्यंजना की गई है कि वस्तुतः नारी भावना के क्षेत्र में नर से बहुत आगे है उसे अपनी इस विशिष्टता को विकसित करने का तथा समूचे मनुष्य समाज को लाभान्वित करने का अवसर दिया गया होता तो हम सब उन भाव संवेदनाओं का लाभ उठाकर , उस आंतरिक आनंद का अनुभव करते जिसकी एक–एक बूंद के लिए तरासना पड रहा है

परिवर्तन के इस युग में नारियों के अधिकार और कर्तव्य की मीमांसा भी आवश्यक है तथा हिन्दी कहानियों में व्यक्त नारियों का स्वरूप भी विचारणीय हो जाता है । उन्नीस सौ नब्बे के बाद हिन्दी में जिन कहानियों की रचना हुई , उनमें व्यक्त महिलाओं का स्वरूप विचारणीय है । सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के कारण महिलाओं ने घरेलू बंधनो से मुक्ति प्राप्त की और विविध क्षेत्रों अपनी सहभागिता प्रकट कर अर्थोपार्जन पर ध्यान दिया अनपढ़ नारिया भी अपने बच्चों का भविश्य सवारने के लिए मेहनत और मजदूरी करती हुई समाज में देखी जा सकती है । ''अगस्त उन्नीस सौ नवासी में मासिक पत्रिका ''आजकल'' में छपी कहानी ''थामनी कांछी'' का उदाहरण लिया जा सकता है।

नारी वादी विचार व्यक्त करने बाली लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में जरूर ऐसे पुरूश का चित्रण किया है जो अपनी पत्नी के प्रेमी को स्वीकार रहा है और फिर भी उसके अपनी पत्नी के साथ सहज स्वाभाविक सम्बंध है । जैसे ''मुक्ता'' (मालती परूलकर) के उपन्यास में मही अपनी पत्नी रूक्की के जितेन्द्र के साथ रहे सम्बंधो को उदारता पूर्वक स्वीकारता है। सन् साठ के पहले समाज में काम वासना के क्षेत्र केवल पुरूषो के लिए था । पुरूष प्रधान संस्कृति में पुरूष इस दृष्टि से मुक्त था और स्त्री पर इस दृष्टि से बंधन ही बंधन थे । स्त्री की कामवासना का सम्बंध पाप पुन्य से जोड़ा गया था । सन साठ के बाद के उपन्यासों में चित्रित नारी कामवासना को सहज प्राकृतिक आकर्षण मानती है । पाप – पुन्य से इसका सम्बंध उसने तोड़ दिया है इसी परिवर्तित दृष्टिकोण के कारण ही आज विधवा पुनर्विाह करने में हिचकिचाती नही है तथा बलात्कारित स्त्री भी सम्मान से जीने की बात सोच सकती है। ''सूरज मुखी अंधेरे में'' (कृष्णा सोवती) , ''डार से विछुड़ी हुई'' (कृष्णा सोवती) , ''छिन्नमस्ता'' (प्रभा खेतान) आदि उपन्यासें में लेखिकाओं ने बलात्कारित स्त्री को अपराध – बोध से बहार निकाला तथा परवर्ती लेखिकाओं ने उसे सहज बनाया ।

सन साठ के बाद के उपन्यासें में विधवा समस्या का हल पुनः विवाह में ढूढां गया । ''तत्सम'' (राजी से) के उपन्यास में विधवा वसुधा के लिए परिवार वाले नये–नये ऑफर लेकर आते है पर वसुधा के मन में कोई उत्सुकता या इच्छा पुनर्विवाह को लेकर नही है इसका कारण नैतिकता या पतिवृत्य की बात नही है बल्कि अपने पति के साथ गहरे भावनात्मक सम्बंध है विधवा के लिए विवाह की अनुमति न मिलना तथा विधवा का खुद विवाह के लिए राजी न होना इन दोनो स्थितियो में काफी अंतर है। पहली स्थिति स्त्री की अधीनता की ओर संकेत करती है, तो दूसरी स्थिति स्त्री की स्वतंत्रा की ओर । अतः कहा जा सकता है कि साठोत्तरी लेखिकाओं ने विधवा की स्वतंत्रता का ध्यान रखा है उसे स्वयं निर्णय लेने का अधिकार दिया है। साठोत्तरी महिला लेखिकाओ नें काम–काजी नारियों की पीड़ा

एवं उसके संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया है। मधु संधू लिखती है ''इन उपन्यासें कि महिलाए पुलिस कर्मियों का , सरकारी अधिकारियों का , मंत्रियों का सामना तो कर सकती है किंतु मारने वाले पति का क्या करें ? युग –युगान्तरों से चला आ रहा वह नारी दमन पूरे विश्व का अभिशाप है'' । नारी कि इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है , उसके के मन में बैठी यह बात–गृहस्ती को न तोड़ना । ''अनारो'' (मंजुला भगत) की अनारो का पति जुआंडी ,शराबी है जो बीबी की कमाई पर ऐश करता है अनारो इस लिए यह सब सहती है क्योकि उसे पुरूष के नाम का एक छत्र चाहिए ।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में हमेशा से नारी का चित्रण सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहा है और होता रहेगा । कहते है साहित्य समाज का दर्पण होता है किसी भी देश और काल के साहित्य को पढकर उस देश व काल की सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियों को जाना जा सकता है आधुनिक काल की नारी किसी भी तरह से अपनी उपेक्षा सहने वाली नही है उसने अपने अधिकारो के लिए लड़ना सीख लिया है वह हर उस बात के खिलाफ खड़ी है जो उसें दोयम दर्जा देती है ।

महिला लेखन (उन्नीस सौ साठ से दो हजार तक) के साहित्य पर विचार किया जाए तो प्रथम चरण में नारी मूक पशु की तरह सब कुछ सहती हुई दिखाई देती है । द्वितीय चरण में नारी अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति कर रही थी उसके मन में यह प्रश्न उठ थे की वह यह सब कुछ क्यों सहती है ? तृतीय चरण में उसने सब कुछ सहने से इंकार कर दिया है । पुरूष के सारे अत्याचारों को सह कर, घुट–घुट कर मरने के बजाय वह पुरूष से अलग रह कर अकेली जीवन जीना अधिक पसंद कर रही हैं। वह आत्मनिर्भर बन गई है । उसका अहं जाग्रत हो गया है। जो बात गलत है उसे मानने से वह इंकार कर रही है जो गलती उसने नही कि उसके लिए वह सजा भुगतने के लिए तैयार नही है।

साहित्यकारो ने नारी की दुर्दशा की ओर समाज का ध्यान आकार्षित किया है जिससे समाज की मानसिकता में नारी के प्रति परिवर्तन आया है और नारी स्वतंत्र , जागरूक , शिक्षित , आत्मनिर्भर , अपने अधिकारों के प्रति सजग,निर्भीक , निर्णयक्षम हुई है ।

संदर्भ ग्रंथ

1 श्रृंखला की कडिया – महादेवी वर्मा
2 महिला उपन्यासकार – डा. मधु संधु
3 महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी वादी द्रष्टि – डा.अमर ज्योति
4 आधुनिक हिन्दी लेखिकाएं – डा. उमेश माथुर
5 हिन्दी उपन्यासों में नारी – शैल रस्तोगी
6 शोधार्णव पत्रिका – हिन्दी महिला उपन्यासकारो का नारी सम्बंधी द्रष्टिकोण – डा. स्मिता सी. पटेल
7 शोधार्णव पत्रिका – कामकाजी महिलाऐं और उत्तर आधुनिकता – गोपाल जी ठाकुर ।